बीएसईएस क्षेत्र में लगे 40 हजार किलोवॉट क्षमता के रूफटॉप सोलर पावर प्लांट्स

नई दिल्लीः 19 सितंबर। बीएसईएस क्षेत्र में अब रूफटॉप सोलर पावर प्लांट्स की कुल उत्पादन क्षमता बढ़कर 40 हजार किलोवॉट हो गई है। घरेलू उपभोक्ता ही नहीं, बल्कि शैक्षिक व धार्मिक संस्थाओं, रेलवे स्टेशन, मेडिकल कॉलेज, जेल, आदि सभी श्रेणियों के उपभोक्ताओं ने सोलर पावर प्लांट्स लगाए हैं। बीएसईएस ने अब तक कुल 1077 नेट मीटरिंग कनेक्शनों को बिजली के ग्रिडों से जोड़ा है।

जिन प्रमुख संस्थानों ने सोलर पावर प्लांट्स लगाए हैं, उनमें मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी, वसंत वैली स्कूल, डीपीएस– ईस्ट ऑफ कैलाश और बाल भारती पब्लिक स्कूल शामिल हैं। धार्मिक आस्था के केंद्र लोटस टेंपल और श्री ऑरबिंदो आश्रम ने भी सोलर नेट मीटरिंग के कनेक्शन लिए हैं। सौर ऊर्जा से जगमगाने वाले अन्य प्रमुख संस्थाओं में शामिल हैं मंडोली जेल, निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन, टेरी, दिल्ली जल बोर्ड, आदि। श्री बालाजी और मिलन विहार जैसी हाउसिंग सोसाइटीज ने भी रूफ टॉप सोलर पावर प्लांट्स लगाए हैं।

घरेलू उपभोक्ताओं द्वारा 6200 किलोवॉट क्षमता के सोलर पावर प्लांट लगाए गए हैं, जबकि व्यावसायिक उपभोक्ताओं द्वारा 1800 किलोवॉट, शैक्षिक संस्थानों द्वारा 8600 किलोवॉट और औद्योगिक उपभोक्ताओं द्वारा 700 किलोवॉट क्षमता के सोलर प्लांट्स लगाए है। इसके अलावा, अन्य श्रेणियों के उपभोक्ताओं ने भी 9500 किलोवॉट क्षमता के सोलर पावर प्लांट्स लगाए हैं।

604 घरेलू उपभोक्ताओं ने, जबकि 262 व्यावसायिक उपभोक्ताओं ने, 178 शैक्षिक संस्थानों ने और 17 औद्योगिक उपभोक्ताओं ने सोलर पावर के प्लांट्स लगाए हैं। इनके अतिरिक्त, अन्य श्रेणियों के 17 उपभेक्ताओं ने भी सौर ऊर्जा के प्लांट्स लगाए हैं।

बीएसईएस प्रवक्ता के मुताबिक, बीएसईएस ने सौर ऊर्जा के जिन प्लांट्स को नेट मीटरिंग से जोड़ा है, उनमें 1 किलोवॉट से 1600 किलोवॉट तक के सैंक्शंड लोड वाले प्लांट्स हैं। उपभोक्ताओं को अब बिजली बिल में कमी के रूप में, सौर ऊर्जा नेट मीटरिंग का लाभ मिलना शुरू हो चुका है। सभी श्रेणियों के उपभोक्ताओं ने बीच इसकी लोकप्रियता बढ़ी है।

एक किलोवॉट क्षमता वाले सौर ऊर्जा प्लांट के लिए 10 वर्गमीटर के रूफटॉप की जरूरत होती है। सोलर प्लांट्स के लिए जरूरी है कि रोशनीदार छत हो और वहां छाया न हो।

आमतौर पर सौर ऊर्जा की बिजली का या तो उसी वक्त इस्तेमाल किया जाता है, या फिर उस ऊर्जा को बैटरी में स्टोर करके उसे बाद में उपयोग के लिए रखा जाता है। इस प्रक्रिया में बैटरी पर अच्छी– खासी लागत आती है। लेकिन, बीएसईएस उपभोक्ताओं को सौर ऊर्जा को स्टोर करने के लिए बैटरी पर पैसे खर्च करने की जरूरत नहीं है। क्योंकि, उनके इस्तेमाल के बाद बची हुई बिजली नेट मीटरिंग के माध्यम से वापस बीएसईएस के ग्रिड में चली जाएगी। उपभोक्ता के सोलर पैलनों से जितनी बिजली बीएसईएस के ग्रिडों में आएगी, उसके लिए उसे बीएसईएस, डीईआरसी द्वारा अप्रूव्ड दरों पर भुगतान भी करेगी।

जिन उपभोक्ताओं के पास सौर ऊर्जा का सेटअप है, वे अपने डिस्कॉम को नेट मीटरिंग के लिए आवेदन दे सेकते हैं। नेट मीटरिंग के लिए एक फॉर्म है, जिसे बीएसईएस की वेबसाइहट www.bsesdelhi.com से डाउनलोड किया जा सकता है। भरा हुआ फॉर्म तय शुल्क के साथ डिस्कॉम के नेट मीटरिंग सेल में जमा कराया जा सकता है।

सौर ऊर्जा का बेहतर इस्तेमाल कर उपभोक्ता अपने बिजली बिल में भारी कमी ला सकते हैं। उपभोक्ता, सौर ऊर्जा का जितना अधिक उत्पादन करेंगे, उनके बिजली बिल में उतनी ज्यादा कमी आएगी। जैसे कि, अगर कोई उपभोक्ता महीने में 500 यूनिट बिजली की खपत करता है और वह 400 यूनिट सौर ऊर्जा का उत्पादन करता है, तो महीने के अंत में वह डिस्कॉम को सिर्फ 100 यूनिट के बिल का भुगतान करेगा।

बीएसईएस देश की उन चुनिंदा डिस्कॉम्स में शामिल है, जो नेट मीटरिंग को जोर– शोर से आगे बढ़ा रही है। बीएसईएस नेट मीटरिंग के लाभों को न सिर्फ बड़े पैमाने पर उपभोक्ताओं के बीच प्रचारित कर रही है, बल्कि सौर ऊर्जा प्लांट लगाने की प्रक्रिया के बारे में भी उन्हें जागरूक कर रही है।

दिल्ली की प्रमुख बिजली वितरण कंपनियां बीआरपीएल और बीवाईपीएल आर–इंफ्रा तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के बीच संयुक्त उद्यम हैं।

——